

1

स्वातंत्र्य दिवस हिन्दी विभागा
द्वितीय सेमेस्टर

दिनांक - 14/5/2020

MONDAY
APRIL

14

1	2	3	4
5	6	7	8
9	10	11	12
13	14	15	16
17	18	19	20
21	22	23	24
25	26	27	28
29	30	31	
M	T	W	T
F	S	S	

14 MAY

विन गोपाल गोरगिरी गड्डु बंजो ।

स्वर्ग लला उगति आति प्रीतन, उान गड्डु निषम उवालकी पुंज

वृषा लहति हृदय जगुना, स्वर्ग कोलन, वृषा नमन प्रीत, उफने गुनी ।।

पवन प्रति दान सौर सौजीकी । दक्षिणत कि स गानु गड्डु गुंज ।

ए, उग गी, कही गो रा गाल सों विरह क दन करि गार लुजें ।।

सूरदास प्रगु को गग जोहन उंक्षिगों गड्डु नरन उगा गुंज ।।

उग गी: - विगाषिगों उावनक उागली गों न देखा

का कि गोपिगों सूरदास की गक्ति साधना, प्रेमी मासना के

बाहिक के रूप में गोपिगों रवड़ी है, पर उागों के पदों में

उाग दे रवे गो कि गहों गोपिगों श्रीकृष्ण के विरह में

उापती दुर्दशा का वर्णन करती है । इस पद में देखा है

कि प्राकृतिक उपादान जो कृष्ण की उपस्थिति में

सूरदासी लगते थे वे उाग अलग अलग दूर दूरी लगे

रहे हैं । गोपिगों का कहना है कि श्रीकृष्ण के बिना

वो फूलवारी, वह कुत, वे हरी-हरी लगाये सब के सब

मेरी दूरमन लन गयी है, बूझी हो गयी है ।

नहीं है। प्रकृतियों को देखा है। स्वयं, स्वयं
 प्रकृतियों को देखा है। स्वयं, स्वयं
 प्रकृतियों को देखा है। स्वयं, स्वयं
 प्रकृतियों को देखा है। स्वयं, स्वयं
 प्रकृतियों को देखा है। स्वयं, स्वयं
 प्रकृतियों को देखा है। स्वयं, स्वयं
 प्रकृतियों को देखा है। स्वयं, स्वयं

श्री १०० का, १०००, ११० का कनककाल

हो का उचितान्तरात्-नीरगा की मादक किरणों
 और की के तपने सूर्य की जलाने वाली लग रही है
 कहते का वाद यम किली भी प्रकार का प्रकृतियों प्रकृति
 उन्हें आदि प्रदान कर रहा है

किसी का अवको ही वापिस करती हुई का
 है कि है। उभय की आप जाकर श्री कृष्ण
 जाकर कहें कि किरण की नीरवी गुरी ने ही

पंखु वनादिमा है उन से न्यूनता फिरना भी
 मुश्किल हो गया है हम लोगों के लिए
 सुरदास जी कहते हैं कि गोपियों उन वस्तु श्रीकृष्ण
 का मग जोहते - जोहते अंतर्गत तक गयी है,
 लगातार देखते - देखते आँसू से आँसू निकल रही
 है। जो आँसू न्यूनता स्वारा पानी भर नहीं रहे
 गये है उनसे आँसू के र-मान पर वस्तु निकल रहे
 है जो आँसू का रंग भी स्वतः वर्ण हो गया है।

हम गहों डूब पक की विशेषताओं की चर्चा

भी करना चाहते है। इसमें प्राकृतिक उपादान का वर्णन
 उदीपन के रूप में किया गया है। विरह की विभिन्न
 दशाओं का वर्णन सुरदास ने परंपरागत रूप में
 किया है। आपने नागमतिविभोग वर्णन में देखा
 होगा की आँसू के गिले से चारों तरफ
 धुंधली पैदा हो गये है। इस पद में अनेक
 आलंकारों का प्रयोग भी साफल्यपूर्वक किया
 गया है। चाहे मधुवीकरण आलंकार ही या

17

THURSDAY
APRIL

4

31					
1	2	3	4	5	6
10	11	12	13	14	15
17	18	19	20	21	22
24	25	26	27	28	29

MAR 14
21st March

उपरोक्त, का रूपक उत्तर 12
 समाप्त साफलता पूर्वक प्रयोग सिमा गंगा है,
 इस प्रकार हम कह सकते हैं यह एक
 महत्वपूर्ण पद है।

कुमार राजनी कान्त सिंह

4/5/2020

4-5-2020